

أَصْدِرُ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۙ (۱۰۹)

सब्र करो²²³ यहां तक कि **अल्लाह** हुकम फरमाए²²⁴ और वोह सब से बेहतर हुकम फरमाने वाला है²²⁵

﴿ آيَاتُهَا ۱۲۳ ﴾ ﴿ ۱۱ سُورَةُ هُودٍ مَكِّيَّةٌ ۵۲ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ۱۰ ﴾

सूरए हूद मक्किय्या है, इस में एक सो तेईस आयतें और दस रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला¹

الرَّ كُتِبَ أُحْكِمَتْ آيَتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۙ (۱)

येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं² फिर तफ्सील की गई³ हिक्मत वाले खबरदार की तरफ से

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۙ (۲) وَأَن

कि बन्दगी न करो मगर **अल्लाह** की बेशक मैं तुम्हारे लिये उस की तरफ से डर और खुशी सुनाने वाला हूं और येह कि

اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُغْفِرْ لَكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ

अपने रब से मुआफी मांगो फिर उस की तरफ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरतना (फाएदा) देगा⁴ एक ठहराए

مُسَىٰ وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ

वा'दे तक और हर फज़ीलत वाले को⁵ उस का फज़ल पहुंचाएगा⁶ और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर

223 : कुफ़र की तकज़ीब और उन की ईजा पर **224** : मुश्रीकीन से क़िताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का । **225** : कि उस के हुकम में ख़ता व ग़लत का एहतिमाल नहीं और वोह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी हालात सब का जानने वाला है, उस का फ़ैसला दलील व गवाह का मोहताज नहीं । **1** : सूरए हूद मक्किय्या है हसन व इकिमा वौरहुम मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि आयत "وَأَقِمْ الصَّلَاةَ طَرَفِي الْبَهَارِ" के सिवा बाकी तमाम सूत मक्किय्या है । मक़ातिल ने कहा कि आयत "فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ" और "أَوَلَيْكَ يَوْمُنُونَ بِهِ" और "إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ" के इलावा तमाम सूत मक्की है, इस में दस रूकूअ और एक सो तेईस आयतें और एक हज़ार छ⁶ सो कलिमे और नव हज़ार पांच सो सरसठ हर्फ हैं । हदीस शरीफ़ में है : सहाबा ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّ اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ हुजूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए । फ़रमाया : मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ, सूरए "عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ" और सूरए "إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" ने बूढ़ा कर दिया । **2** : ग़ालिबन येह इस वज्ह से फ़रमाया कि इन सूतों में क़ियामत व बअूस व हिसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है । **3** : जैसा कि दूसरी आयत में इशाद हुवा : "تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ" । बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि "أُحْكِمَتْ" के मा'ना येह हैं कि इन की नज़म मोहक़म व उस्तुवार की गई । इस सूत में मा'ना येह होंगे कि इस में नक्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वोह बिनाए मोहक़म है । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कोई किताब इन की नासिख़ नहीं जैसा कि येह दूसरी किताबों और शरीअतों की नासिख़ हैं । **4** : और सूत सूत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गई या अ़लाहदा अ़लाहदा नाज़िल हुई या अ़काइद व अहक़ाम व मवाइज़ व क़िसस और ग़ैबी ख़बरें इन में ब तफ्सील बयान फ़रमाई गई **5** : उम्रे दराज़ और ऐशे वसीअ व रिज़्के कसीर । **फाएदा** : इस से मा'लूम हुवा कि इख़लास के साथ तौबा व इस्तिफ़ार करना दराज़िये उम्र व कशाइशे रिज़्के के लिये बेहतर अमल है । **6** : जिस ने दुन्या में आ'माले फ़ाज़िला किये हों और उस की ताआत व हसनात ज़ियादा हों **7** : उस को जन्नत में ब क़दरे आ'माल दरजात अ़ता फ़रमाएगा । बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया : आयत के मा'ना येह हैं कि जिस ने **अल्लाह** के लिये अमल किया, **अल्लाह** तआला आयिन्दा के लिये उसे अमले नेक व ताअत की तौफ़ीक़ देता है ।

عَلَيْكُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ كَبِيرٍ ٣ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

बड़े दिन⁷ के अज़ाब का ख़ौफ़ करता हूँ तुम्हें **अल्लाह** ही की तरफ़ फिरना है⁸ और वोह हर शै पर

قَدِيرٌ ٤ اَلَا اِنَّهُمْ يَثْتُونَ صُدُوْرَاهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ط اَلَا

कादिर है⁹ सुनो वोह अपने सीने दोहरे करते (मुंह छुपाते) हैं कि **अल्लाह** से पर्दा करें¹⁰ सुनो

حِيْنَ يَسْتَعْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ لَا يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ج

जिस वक़्त वोह अपने कपड़ों से सारा बदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी **अल्लाह** उन का छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है

اِنَّهٗ عَلَيْهِمۡ اِبْدَاتِ الصُّدُوْرِ ه٥

बेशक वोह दिलों की बात जानने वाला है

7 : या'नी रोज़े क़ियामत 8 : आख़िरत में वहां नेकियों और बदियों की जज़ा व सज़ा मिलेगी । 9 : दुन्या में रोज़ी देने पर भी, मौत देने पर भी, मौत के बा'द ज़िन्दा करने और सवाब व अज़ाब पर भी । 10 शाने नुज़ूल : इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया : येह आयत अख़स बिन शरीक के हक़ में नाज़िल हुई येह बहुत शीरी गुफ़्तार शख़्स था, रसूले करीम صلی الله علیه وسلم के सामने आता तो बहुत खुशामद की बातें करता और दिल में बुज़ुओ अ़दावत छुपाए रखता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । मा'ना येह हैं कि वोह अपने सीनों में अ़दावत छुपाए रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है, एक क़ौल येह है कि बा'जे मुनाफ़िक्कीन की अ़दत थी कि जब रसूले करीम صلی الله علیه وسلم का सामना होता तो सीना और पीठ झुकाते और सर नीचा करते चेहरा छुपा लेते ताकि उन्हें रसूले करीम صلی الله علیه وسلم देख न पाएं इस पर येह आयत नाज़िल हुई । बुख़ारी ने अफ़ाद में एक हदीस रिवायत की, कि मुसल्मान बौलो बराज़ व मुजामअत के वक़्त अपने बदन खोलने से शरमाते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई कि **अल्लाह** से बन्दे का कोई हाल छुपा ही नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि वोह शरीअत की इजाज़तों पर अ़मिल रहे ।

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رَاغِبًا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا

और ज़मीन पर चलने वाला कोई¹¹ ऐसा नहीं जिस का रिज़क़ **ALLAH** के ज़िम्मे करम पर न हो¹² और जानता है कि कहां ठहरेगा¹³

وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ ۱۲ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ

और कहां सिपुर्द होगा¹⁴ सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब¹⁵ में है और वोही है जिस ने आस्मानों और

الْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ

ज़मीन को छ⁶ दिन में बनाया और उस का अर्श पानी पर था¹⁶ कि तुम्हें आज्माए¹⁷ तुम में

أَحْسَنُ عَمَلًا ۝ ۱۳ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ

किस का काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बा'द उठाए जाओगे

لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ ۱۴ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا

तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि यह¹⁸ तो नहीं मगर खुला जादू¹⁹ और अगर हम उन से

عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولَنَّ مَا يَحِبُّسُهُ ۝ ۱۵ إِلَّا يَوْمَ

अज़ाब²⁰ कुछ गिनती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने उसे रोका है²¹ सुन लो जिस दिन

يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ ۱۶

उन पर आएगा उन से फेरा न जाएगा और उन्हें घेर लेगा वोही अज़ाब जिस की हंसी उड़ाते थे

وَلَئِنْ أَدْخَلْنَا الْإِنْسَانَ مِثْلَ نَارٍ حَمِيمَةٍ ثُمَّ نَزَعْنَا مِنْهُ ۝ ۱۷ إِنَّهُ لَيَكُوفُ

और अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मज़ा दें²² फिर उसे उस से छिन लें ज़रूर वोह बड़ा ना उम्मीद

كُفُورًا ۝ ۱۸ وَلَئِنْ أَدْخَلْنَا نَعْمَاءً بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسْتَهْزِئَةٍ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ

नाशुक्रा है²³ और अगर हम उसे ने'मत का मज़ा दें उस मुसीबत के बा'द जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि बुराइयां

11 : जानदार हो 12 : या'नी वोह अपने फ़ज़ल से हर जानदार के रिज़क़ का कफ़ील है। 13 : या'नी उस के जाए सुकूनत को जानता है।

14 : सिपुर्द होने की जगह से या मदफ़न मुराद है या मकान या मौत या क़ब्र। 15 : या'नी लौहे महफूज़ 16 : या'नी अर्श के नीचे पानी के

सिवा और कोई मख़लूक न थी। इस से यह भी मा'लूम हुवा कि अर्श और पानी आस्मानों और ज़मीनों की पैदाइश से क़बल पैदा फ़रमाए

गए। 17 : या'नी आस्मान व ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात को पैदा किया जिस में तुम्हारे मनाफ़ेअ व मसालेह (भलाइयां) हैं ताकि

तुम्हें आज्माइश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्र गुज़ार, मुतक़ी, फ़रमां बरदार है और 18 : या'नी कुरआन शरीफ़ जिस में मरने के बा'द

उठाए जाने का बयान है यह 19 : या'नी बातिल और धोका। 20 : जिस का वा'दा किया है 21 : वोह अज़ाब क्यूं नाज़िल नहीं होता? क्या

देर है? कुफ़र का यह जल्दी करना बराहे तक़ीब व इस्तिहज़ा है। 22 : सिह्हत व अमन का या वुस्अते रिज़क़ व दौलत का 23 : कि दोबारा

उस ने'मत के पाने से मायूस हो जाता है और **ALLAH** के फ़ज़ल से अपनी उम्मीद क़त्अ (ख़त्म) कर लेता है और सब्रो रिज़ा पर साबित नहीं

रहता और गुज़शता ने'मत की नाशुक्रो करता है।

السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۖ إِنَّهُ لَفَرِحَ فَخُورٌ ۝۱۰ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا

मुझ से दूर हुई बेशक वोह खुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है²⁴ मगर जिन्होंने ने सब्र किया और

الصَّالِحَاتِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝۱۱ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ

अच्छे काम किये²⁵ उन के लिये बख्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या जो वही तुम्हारी तरफ

مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَصَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ

होती है उस में से कुछ तुम छोड़ दोगे और उस पर दिलतंग होगे²⁶ इस बिना पर कि वोह कहते हैं इन के साथ

كُنُوزٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

कोई खोजना क्यूं न उतरा या इन के साथ कोई फ़िरिस्ता आता तुम तो उर सुनाने वाले हो²⁷ और **अल्लाह** हर चीज़ पर

وَكَيْلٌ ۝۱۲ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَاتٍ

मुहाफ़िज़ है क्या²⁸ यह कहते हैं कि इन्होंने ने इसे जी से बना लिया तुम फ़रमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरे ले आओ²⁹

وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝۱۳ فَالِمُ

और **अल्लाह** के सिवा जो मिल सके³⁰ सब को बुला लो अगर सच्चे हो³¹ तो ऐ मुसलमानो

يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنبَاءَ أَنْزَلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ

अगर वोह तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सके तो समझ लो कि वोह **अल्लाह** के इल्म ही से उतरा है और यह कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं

فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ۝۱۴ مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزَيٰدَتَهَا نُوَفِّ

तो क्या अब तुम मानोगे³² जो दुनिया की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो³³ हम इस में

24 : बजाए शुक़ गुज़ार होने और हक्के ने'मत अदा करने के । 25 : मुसीबत पर साबिर और ने'मत पर शाकिर रहे 26 : तिरमिज़ी ने कहा कि इस्तिफ़हाम "नहय" के मा'ना में है या'नी आप की तरफ़ जो वही होती है वोह सब आप उन्हें पहुंचाएं और दिलतंग न हों । येह तब्लीग़े रिसालत की ताकीद है बा वुजूदे कि **अल्लाह** तआला जानता है कि उस के रसूल **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** अदाए रिसालत में कमी करने वाले नहीं और उस ने इन को इस से मा'सूम फ़रमाया है । इस ताकीद में नबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तस्कीने खातिर भी है और कुफ़र की मायूसी भी कि उन का इस्तिहज़ा तब्लीग़े के काम में मुखिल नहीं हो सकता । **शाने नुज़ूल** : अब्दुल्लाह बिन उमय्या मख़ज़ूमी ने रसूले करीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आप का खुदा हर चीज़ पर कादिर है तो उस ने आप पर ख़ज़ाना क्यूं नहीं उतरा ? या आप के साथ कोई फ़िरिस्ता क्यूं नहीं भेजा ? जो आप की रिसालत की गवाही देता, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई । 27 : तुम्हें क्या परवाह अगर कुफ़र न मानें या तमस्बुर करें । 28 : कुफ़ारे मक्का कुरआने करीम की निस्बत 29 : क्यूं कि इन्सान अगर ऐसा कलाम बना सकता है तो इस के मिसल बनाना तुम्हारे मक़दूर से बाहर न होगा ! तुम भी अरब हो फ़सीहो बलीग़ हो कोशिश करो । 30 : अपनी मदद के लिये 31 : इस में कि येह कलाम इन्सान का बनाया हुवा है । 32 : और यकीन रखोगे कि येह **अल्लाह** की तरफ़ से है, या'नी ए'जाज़े कुरआन देख लेने के बा'द ईमान व इस्लाम पर साबित रहे । 33 : और अपनी दून हिम्मती (ग़फ़लत) से आख़िरत पर नज़र न रखता हो ।

إِلَيْهِمْ أَعْمَالُهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ

उन का पूरा फल दे दोगे³⁴ और इस में कमी न दोगे यह हैं वोह जिन के लिये

لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۗ وَحِطَّ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطْلٌ مَّا كَانُوا

आखिरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद (बरबाद) हुए जो उन के

يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيْتِنَا مِنْ رَبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِنْهُ وَمِنْ

अमल थे³⁵ तो क्या वोह जो अपने रब की तरफ से रोशन दलील पर हो³⁶ और उस पर **अल्लाह** की तरफ से गवाह आए³⁷ और उस

قَبْلَهُ كِتَابٌ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۗ أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ

से पहले मूसा की किताब³⁸ पेशवा और रहमत वोह इस पर³⁹ ईमान लाते हैं और जो इस का मुन्कर हो

بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالْتَأَمُّ مَوْعِدُهُ ۗ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ ۗ إِنَّهُ الْحَقُّ

सारे गुरौहों में⁴⁰ तो आग उस का वा'दा है तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ उस में शक न हो बेशक वोह हक है

مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ

तेरे रब की तरफ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर

عَلَىٰ اللَّهِ كَذِبًا ۗ أُولَئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ

झूट बांधे⁴¹ वोह अपने रब के हुजूर पेश किये जाएंगे⁴² और गवाह कहेंगे यह हैं

الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۗ آلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ

जिन्होंने ने अपने रब पर झूट बोला था अरे ज़ालिमों पर खुदा की ला'नत⁴³ जो

34 : और जो आ'माल उन्हों ने तलबे दुन्या के लिये किये हैं उस का अज्र सिहहतो दौलत, वुस्अते रिज़्क, कस्ते औलाद वगैरा से दुन्या ही में पूरा कर दोगे । 35 शाने नुज़ूल : ज़ह्हाक ने कहा कि येह आयत मुशिरकीन के हक में है कि वोह अगर सिलए रेहूमी करें या मोहताजों को दें या किसी परेशान हाल की मदद करें या इस तरह की कोई और नेकी करें तो **अल्लाह** तआला वुस्अते रिज़्क वगैरा से उन के अमल की जज़ा दुन्या ही में दे देता है और आखिरत में उन के लिये कोई हिस्सा नहीं । एक कौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िकीन के हक में नाज़िल हुई जो सवाबे आखिरत के तो मो'तकिद न थे और जिहादों में माले गुनीमत हासिल करने के लिये शामिल होते थे । 36 : वोह उस की मिस्ल हो सकता है जो दुन्या की जिन्दगी और इस की आराइश चाहता हो, ऐसा नहीं, इन दोनों में अज़ीम फ़र्क है । रोशन दलील से वोह दलीले अक़ली मुराद है जो इस्लाम की हक़कानियत पर दलालत करे और उस शख़्स से जो अपने रब की तरफ़ से रोशन दलील पर हो वोह यहूद मुराद हैं जो इस्लाम से मुशरफ़ हुए जैसे कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम । 37 : और उस की सिहहत की गवाही दे । येह गवाह कुरआने मजीद है । 38 : या'नी तौरैत । 39 : या'नी कुरआन पर 40 : ख़्वाह कोई भी हों । हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : उस की कसम जिस के दस्ते कुदरत में मुहम्मद **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की जान है ! इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी जिस को भी मेरी खबर पहुंचे और वोह मेरे दीन पर ईमान लाए बिगैर मर जाए, वोह जरूर जहनमी है । 41 : और उस के लिये शरीक व औलाद बताए । इस आयत से साबित होता है कि **अल्लाह** तआला पर झूट बोलना बद तरीन जुल्म है । 42 : रोज़े क़ियामत और उन से उन के आ'माल दरयाफ़्त किये जाएंगे और अम्बिया व मलाएक़ा उन पर गवाही दोगे । 43 : बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत कुफ़र और मुनाफ़िकीन

يُصَدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ

अब्ब्राह्म की राह से रोकते हैं और इस में कजी चाहते हैं और वोही आखिरत के

كُفْرُونَ ۝۱۹ أُولَئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ

मुन्किर हैं वोह थकाने वाले नहीं ज़मीन में⁴⁴ और न अब्ब्राह्म से जुदा

مَنْ دُونَ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۖ يُضَعِفُ لَهُمْ الْعَذَابُ ۖ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ

उन के कोई हिमायती⁴⁵ उन्हें अज़ाब पर अज़ाब होगा⁴⁶ वोह न सुन सकते

السَّعَىٰ وَمَا كَانُوا يَبْصُرُونَ ۝۲۰ أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَ

थे और न देखते⁴⁷ वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली और

ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝۲۱ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ

उन से खोई गई जो बातें जोड़ते थे ख़्वाह न ख़्वाह (यकीनन) वोही आखिरत में सब से

الْأَخْسَرُونَ ۝۲۲ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبْتُوا إِلَىٰ

ज़ियादा नुक़सान में हैं⁴⁸ बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की तरफ़

رَبِّهِمْ ۖ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝۲۳ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ

रुजूअ़ लाए वोह जन्मत वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे दोनों फ़रीक़⁴⁹ का हाल ऐसा है

كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّبِيعِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ۖ أَفَلَا

जैसे एक अन्धा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता⁵⁰ क्या इन दोनों का हाल एक सा है⁵¹ तो क्या

تَذَكَّرُونَ ۝۲۴ وَ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ

तुम ध्यान नहीं करते और बेशक हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा⁵² कि मैं तुम्हारे लिये सरीह़ डर

को तमाम ख़ल्क के सामने कहा जाएगा कि येह वोह हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, ज़ालिमों पर खुदा की ला'नत, इस तरह वोह तमाम ख़ल्क के सामने रुस्वा किये जाएंगे। 44 : अब्ब्राह्म को। अगर वोह उन पर अज़ाब करना चाहे क्यूं कि वोह उस के क़ब्जे और उस की मिल्क में हैं, न उस से भाग सकते हैं न बच सकते हैं। 45 : कि उन की मदद करें और उन्हें उस के अज़ाब से बचाएं। 46 : क्यूं कि उन्होंने ने लोगों को राहे खुदा से रोका और मरने के बा'द उठने का इन्कार किया। 47 : क़तादा ने कहा कि वोह हक़ सुनने से बहरे हो गए तो कोई ख़ैर की बात सुन कर नफ़अ नहीं उठाते और न वोह आयते कुदरत को देख कर फ़ाएदा उठाते हैं। 48 : कि उन्होंने ने बजाए जन्मत के जहन्म को इख़्तियार किया। 49 : या'नी काफ़िर और मोमिन 50 : काफ़िर उस की मिस्ल है जो न देखे न सुने, येह नाक़िस है और मोमिन उस की मिस्ल है जो देखता भी है और सुनता भी है, वोह कामिल है हक़ व बातिल में इम्तियाज़ रखता है। 51 : हरगिज़ नहीं 52 : उन्होंने ने क़ौम से फ़रमाया।

مُبِينٌ ۲۵) أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ

सुनाने वाला हूँ कि **ALLAH** के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुम पर एक मुसीबत वाले दिन के अज़ाब से

الْيَوْمِ ۲۶) فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرِكَ إِلَّا بَشَرًا

डरता हूँ⁵³ तो उस की कौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते

مِثْلَنَا وَمَا تَرِكَ أَتَّبِعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا أَنْ يُبَادُوا ۚ الرَّأْيِ ۚ وَ

हैं⁵⁴ और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने⁵⁵ सरसरी नज़र से⁵⁶ और

مَا تَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَذِبِينَ ۲۷) قَالَ يَقَوْمِ

हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते⁵⁷ बल्कि हम तुम्हें⁵⁸ झूटा खयाल करते हैं बोला ऐ मेरी कौम

أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيْنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَآتَيْنِي رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهِ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रोशन दलील पर हूँ⁵⁹ और उस ने मुझे अपने पास से रहमत बख़री⁶⁰

فَعَبَّيْتُ عَلَيْكُمْ ۖ أَنْزَلْنَاكُمْ هَاوَاتٍ لِّهِنَّ كَرِهُونَ ۲۸) وَيَقَوْمِ لَا تَسْأَلُونَ

तो तुम उस से अन्धे रहे क्या हम उसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो⁶¹ और ऐ कौम मैं तुम से कुछ इस पर⁶²

عَلَيْهِ مَا لَا ۖ إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَىٰ اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا ۖ

माल नहीं मांगता⁶³ मेरा अज़्र तो **ALLAH** ही पर है और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं⁶⁴

إِنَّهُمْ مُّلقُوا أَرَابِهِمْ وَلَكِنِّي أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۲۹) وَيَقَوْمِ مَنْ

बेशक वोह अपने रब से मिलने वाले हैं⁶⁵ लेकिन मैं तुम को निरे जाहिल लोग पाता हूँ⁶⁶ और ऐ कौम

53 : हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهم** ने फ़रमाया कि हज़रते नूह **عليه السلام** चालीस साल के बा'द मबक़स हुए और नव सो पचास साल अपनी कौम को दा'वत फ़रमाते रहे और तूफ़ान के बा'द साठ बरस दुन्या में रहे तो आप की उम्र एक हज़ार पचास साल की हुई, इस के इलावा उम्र शरीफ़ के मुतअल्लिक और भी कौल हैं। 54 : इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें मुब्तला हो कर इस्लाम से महरूम रहीं, कुरआने पाक में जा ब जा उन के तज़्किरे हैं। इस उम्मत में भी बहुत से बद नसीब सय्यिदे अम्बिया **صل الله تعالى عليهم وسلم** को बशर कहते और हमसरी का खयाले फ़ासिद रखते हैं। **ALLAH** तआला उन्हें गुमराही से बचाए। 55 : कमीनों से मुराद उन की वोह लोग थे जो उन की नज़र में खसीस (अदना व मा'मूली) पेशे रखते थे और हक़ीक़त येह है कि उन का येह कौल जहले ख़ालिस था क्यूं कि इन्सान का मर्तबा दीन की इत्तिबाअ और रसूल की फ़रमां बरदारी से है मालो मन्सब व पेशे को इस में दख़ल नहीं। दीनदार नेक सीरत पेशावर को नज़रे हक़ारत से देखना और हक़ीर जानना जाहिलाना फ़ै'ल है। 56 : या'नी बिगौर ग़ौरो फ़िक्क के। 57 : माल और रियासत में, उन का येह कौल भी जहल था क्यूं कि **ALLAH** के नज़्दीक बन्दे के लिये ईमान व ताअत सबबे फ़ज़ीलत है न कि माल व रियासत। 58 : नुबुव्वत के दा'वे में और तुम्हारे मुतबिइन को इस की तस्दीक में 59 : जो मेरे दा'वे के सिद्क़ पर गवाह हो 60 : या'नी नुबुव्वत अत्ता की 61 : और इस हुज्जत को ना पसन्द रखते हो। 62 : या'नी तब्लीगे रिसालत पर 63 : कि तुम पर उस का अदा करना गिरां हो 64 : येह हज़रते नूह **عليه السلام** ने उन की इस बात के जवाब में फ़रमाया था जो वोह लोग कहते थे कि ऐ नूह ! रज़ील (हक़ीर व कमीन) लोगों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हमें आप की मजलिस में बैठने से शर्म न आए। 65 : और उस के कुर्ब से फ़ाइज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूँ 66 : ईमानदारों को रज़ील कहते हो और

يَبْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝۳۰ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ

मुझे **अल्लाह** से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूंगा तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं और मैं तुम से नहीं कहता कि

عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ

मेरे पास **अल्लाह** के खज़ाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब जान लेता हूँ और न यह कहता हूँ कि मैं फ़िरिश्ता हूँ⁶⁷ और मैं उन्हें नहीं कहता

لِلَّذِينَ تَرَدُّرَىٰ أَعْيُنِكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي

जिन को तुम्हारी निगाहें हकीर समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें **अल्लाह** कोई भलाई न देगा **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो

أَنْفُسِهِمْ ۖ إِنِّي إِذَا لَسِنَ الظَّالِمِينَ ۝۳۱ قَالُوا يُنُوحُ قَدْ جَدَلْتَنَا

उन के दिलों में है⁶⁸ ऐसा करूँ⁶⁹ तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूँ⁷⁰ बोले ऐ नूह तुम हम से झगड़े

فَاكْثَرْتَ جِدَالَاتِنَا بِمَا تَعْدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝۳۲ قَالَ

और बहुत ही झगड़े तो ले आओ जिस⁷¹ का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो बोला

إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِبُعْجِرِينَ ۝۳۳ وَلَا يَنْفَعُكُمْ

वोह तो **अल्लाह** तुम पर लाएगा अगर चाहे और तुम थका न सकोगे⁷² और तुम्हें मेरी नसीहत

نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ ۖ هُوَ

नफ़अ न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूँ जब कि **अल्लाह** तुम्हारी गुमराही चाहे वोह

उन की कद्र नहीं करते और नहीं जानते कि वोह तुम से बेहतर हैं। 67 : हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَامُ** की कौम ने आप की नुबुव्वत में तीन शुब्हे किये थे : एक शुबा तो येह कि "مَا نَسَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ" कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते या'नी तुम मालो दौलत में हम से ज़ियादा नहीं हो। इस के जवाब में हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَامُ** ने फ़रमाया : "لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ" या'नी मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास **अल्लाह** के खज़ाने हैं, तो तुम्हारा येह ए'तिराज़ बिल्कुल बे महल है। मैं ने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुन्यवी दौलत का तुम को मुतवक्फ़अ नहीं किया और अपनी दा'वत को माल के साथ वाबस्ता नहीं किया फिर तुम येह कहने के कैसे मुस्तहिक़ हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते और तुम्हारा येह ए'तिराज़ महज़ बेहूदा है। दूसरा शुबा कौम नूह ने येह किया था : "مَا نَرَاكَ أَتْبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا أَنْ يُبَدِّلُوا الْوَسْطَانِ" या'नी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से। मतलब येह था कि वोह भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मोमिन हैं बातिन में नहीं। इस के जवाब में हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَامُ** ने येह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूँ तो मेरे अहकाम ग़ैब पर मन्वी हैं ताकि तुम्हें येह ए'तिराज़ करने का मौक़अ होता। जब मैं ने येह कहा ही नहीं, तो ए'तिराज़ बे महल है, और शरअ में ज़ाहिर ही का ए'तिबार है, लिहाज़ा तुम्हारा ए'तिराज़ बिल्कुल बे जा है नीज़ "لَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ" फ़रमाने में कौम पर एक लतीफ़ ता'रीज़ भी है कि किसी के बातिन पर हुक्म करना उस का काम है जो ग़ैब का इल्म रखता हो। मैं ने तो इस का दा'वा नहीं किया बा वुजूद कि नबी हूँ ! तुम किस तरह कहते हो कि वोह दिल से ईमान नहीं लाए। तीसरा शुबा उस कौम का येह था कि "مَا نَرَاكَ أَتْبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا أَنْ يُبَدِّلُوا الْوَسْطَانِ" या'नी हम तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं। इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं तुम से येह नहीं कहता कि मैं फ़िरिश्ता हूँ या'नी मैं ने अपनी दा'वत को अपने फ़िरिश्ता होने पर मौक़अ नहीं किया था कि तुम्हें येह ए'तिराज़ का मौक़अ मिलता कि जताते तो थे वोह अपने आप को फ़िरिश्ता और थे बशर लिहाज़ा तुम्हारा येह ए'तिराज़ भी बातिल है। 68 : नेकी या बदी, इख़्लास या निफ़ाक़। 69 : या'नी अगर मैं उन के ईमाने ज़ाहिर को झुटला कर उन के बातिन पर इल्ज़ाम लगाऊँ और उन्हें निकाल दूँ 70 : और **بِحَمْدِ اللَّهِ** मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूँ तो ऐसा कभी न करूंगा। 71 : अज़ाब 72 : उस को अज़ाब करने से, या'नी न उस अज़ाब

رَأْبِكُمْ ۚ وَالْيَهُ تَرْجِعُونَ ۚ ۳۳ ۚ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ

तुम्हारा ख है और उसी की तरफ़ फिरोगे⁷³ क्या ये कहते हैं कि इन्होंने ने इसे अपने जी से बना लिया⁷⁴ तुम फ़रमाओ अगर मैं ने बना लिया होगा

فَعَلَىٰ أَجْرَاهِ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَجْرِمُونَ ۚ ۳۵ ۚ وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ

तो मेरा गुनाह मुझ पर है⁷⁵ और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूँ और नूह को व्हय हुई कि तुम्हारी

يُؤْمِنُ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۚ ۳۶ ۚ

क़ौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उस पर जो वोह करते हैं⁷⁶

وَأَصْنَعُ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحِينَا وَلَا تَخَاطِبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ

और कश्ती बना हमारे सामने⁷⁷ और हमारे हुकम से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना⁷⁸ वोह ज़रूर

مُغْرَقُونَ ۚ ۳۷ ۚ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۚ وَكَلَّمَآءَ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا

डुबाए जाएंगे⁷⁹ और नूह कश्ती बनाता है और जब उस की क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर

مِنْهُ ۚ قَالَ إِنَّ تَسْخِرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخِرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخِرُونَ ۚ ۳۸ ۚ فَسَوْفَ

हंसते⁸⁰ बोला अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे⁸¹ जैसा तुम हंसते हो⁸² तो अब

تَعْلَمُونَ ۚ ۳۹ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ ۳۹ ۚ

जान जाओगे किस पर आता है वोह अज़ाब कि उसे रुखा करे⁸³ और उतरता है वोह अज़ाब जो हमेशा रहे⁸⁴

को रोक सकोगे न उस से बच सकोगे । 73 : आखिरत में वोही तुम्हारे आ'माल का बदला देगा । 74 : और इस तरह खुदा के कलाम और उस के अहकाम मानने से गुरेज़ करते हैं और उस के रसूल पर बोहतान उठाते हैं और उन की तरफ़ इफ़्तिरा की निस्बत करते हैं जिन का सिद्क (सच्चा होना) बराहीने बय्यिना और हुज्जते कविय्या (इन्तिहाई वाजेह और मजबूत दलाइल) से साबित हो चुका है, लिहाज़ा अब उन से 75 : ज़रूर इस का वबाल आएगा लेकिन "بِحَمْدِ اللَّهِ" मैं सादिक हूँ, तो तुम समझ लो कि तुम्हारी तक्ज़ीब का वबाल तुम पर पड़ेगा । 76 : या'नी कुफ़ और आप की तक्ज़ीब और आप की ईज़ा क्यूँ कि अब आप के आ'दा से इन्तिकाम लेने का वक़्त आ गया । 77 : हमारी हिफ़ज़त में, हमारी ता'लीम से 78 : या'नी उन की शफ़अत और दफ़ अज़ाब की दुआ न करना क्यूँ कि उन का गर्क मुक़दर हो चुका है 79 : हदीस शरीफ़ में है कि हज़रते नूह عليه الصّلوٰة والسلام ने ब हुकमे इलाही साल के दरख़्त बोए, बीस साल में येह दरख़्त तय्यार हुए । इस अर्से में मुत्लक़न कोई बच्चा पैदा न हुवा, इस से पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वोह बालिग़ हो गए और उन्हीं ने भी हज़रते नूह عليه الصّلوٰة والسلام की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया और हज़रते नूह عليه الصّلوٰة والسلام कश्ती बनाने में मशगूल हुए । 80 : और कहते ऐ नूह ! क्या करते हो ? आप फ़रमाते : ऐसा मकान बनाता हूँ जो पानी पर चले । येह सुन कर हंसते क्यूँ कि आप कश्ती जंगल में बनाते थे जहां दूर दूर तक पानी न था और वोह लोग तमस्खुर (मज़ाक़) से येह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे अब बड़ई हो गए । 81 : तुम्हें हलाक़ होता देख कर 82 : कश्ती देख कर । मरवी है कि येह कश्ती दो साल में तय्यार हुई, इस की लम्बाई तीन सो गज़, चौड़ाई पचास गज़, ऊंचाई तीस गज़ थी, इस में और भी अक्वाल हैं । इस कश्ती में तीन दरजे बनाए गए थे । तब्कए ज़ेरीं (निचली मन्ज़िल) में वुहूश (जंगली जानवर) और दरिन्दे (चौर फ़ाड़ करने वाले जानवर) और हवाम (ज़मीन पर रींगने वाले जानवर) और दरमियानी तबके में चौपाए वगैरा, और तब्कए आ'ला में खुद हज़रते नूह عليه الصّلوٰة والسلام और आप के साथी और हज़रते आदम عليه الصّلام का जसदे मुबारक जो औरतों और मर्दों के दरमियान हाइल था और खाने वगैरा का सामान था । परिन्दे भी ऊपर ही के तब्के में थे । (غازن ومارك) 83 : दुन्या में और वोह अज़ाबे गर्क है । 84 : या'नी अज़ाबे आखिरत ।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُوْرُ ۗ قُلْنَا حَبْلٌ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया⁸⁵ और तनूर उबला⁸⁶ हम ने फरमाया कश्ती में सुवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा

اِثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۗ وَمَا آمَنَ مَعَهُ

नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है⁸⁷ उन के सिवा अपने घर वालों और बाकी मुसल्मानों को और उस के साथ मुसल्मान न थे

إِلَّا قَلِيلٌ ۙ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَمُرسَهَا ۗ إِنَّ

मगर थोड़े⁸⁸ और बोला इस में सुवार हो⁸⁹ **اللَّهُ** के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना⁹⁰ बेशक

رَبِّي لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۗ وَنَادَىٰ

मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है और वोह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़⁹¹ और नूह ने

نُوحَ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبَيِّنُ اِرْكَبُ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ

अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से कनारे था⁹² ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़ि़रों के साथ न हो⁹³

قَالَ سَاوِيْٓ اِلَىٰ جَبَلٍ يَّعِصِنِيْ مِنَ الْمٰءِ ۗ قَالَ لَا عٰصِمَ الْيَوْمَ مِنْ

बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूँ वोह मुझे पानी से बचा लेगा कहा आज **اللَّهُ** के अज़ाब से कोई बचाने वाला

اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۗ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُعٰرِقِيْنَ ۙ

नहीं मगर जिस पर वोह रहम करे और उन के बीच में मौज आड़े आई तो वोह डूबतों में रह गया⁹⁴

وَقِيلَ يَا اَرْضُ ابْلَعِيْ مٰءَكَ وَليْسَآءِ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمٰءِ وَقَضِيْ

और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम

85 : अज़ाब व हलाक का **86** : और पानी ने उस में से जोश मारा । तनूर से या रूए ज़मीन मुराद है या येही तनूर जिस में रोटी भी पकाई जाती है । इस में भी चन्द क़ौल है : एक क़ौल येह है कि वोह तनूर पथर का था, हज़रते ह्व्वा का जो आप को तर्क में पहुंचा था और वोह या शाम में था या हिन्द में और तनूर का जोश मारना अज़ाब आने की अ़लामत थी । **87** : या'नी उन के हलाक का हुक्म हो चुका है और उन से मुराद आप की बीबी वाइला जो ईमान न लाई थी और आप का बेटा क़न्आन है । चुनाच्चे हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उन सब को सुवार किया । जानवर आप के पास आते थे और आप का दाहना हाथ नर पर और बायां मादा पर पड़ता था और आप सुवार करते जाते थे ।

88 : मुक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द व औरत बहतर **72** थे और इस में और अक्वाल भी हैं, सहीह ता'दाद **اللَّهُ** जानता है उन की ता'दाद किसी सहीह हदीस में वारिद नहीं है । **89** : येह कहते हुए कि **90** : इस में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो उस को "بِسْمِ اللّٰهِ" पढ़ कर शुरू करे ताकि उस काम में बरकत हो और वोह सबबे फ़लाह हो । ज़ह़ाक ने कहा कि जब हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** चाहते थे कि कश्ती चले तो "بِسْمِ اللّٰهِ" फ़रमाते थे कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाए "بِسْمِ اللّٰهِ" फ़रमाते थे ठहर जाती थी । **91** : चालीस शबो रोज़ आस्मान से मीह बरसता रहा और ज़मीन से पानी उबलता रहा यहां तक कि तमाम पहाड़ ग़र्क हो गए । **92** : या'नी हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** से जुदा था, आप के साथ सुवार न हुवा था । **93** : कि हलाक हो जाएगा । येह लड़का मुनाफ़ि़क था, अपने वालिद पर अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करता था और बातिन में काफ़ि़रों के साथ मुत्तफ़ि़क था । **94** : जब तूफ़ान अपनी निहायत (इन्तिहा) पर पहुंचा और कुफ़़र ग़र्क हो चुके तो हुक्मे इलाही आया ।

الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿۳۳﴾ وَ

हुवा और कश्ती⁹⁵ कोहे जूदी पर ठहरी⁹⁶ और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग और

نَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ

नूह ने अपने रब को पुकारा अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है⁹⁷ और बेशक तेरा वा'दा सच्चा है

وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ﴿۳۴﴾ قَالَ يُنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ

और तू सब से बढ़ कर हुक्म वाला⁹⁸ फ़रमाया ऐ नूह वोह तेरे घर वालों में नहीं⁹⁹ बेशक उस के

عَمَلٌ غَيْرٌ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعْطَكُ أَنْ

काम बड़े ना लाइक हैं तो मुझे से वोह बात न मांग जिस का तुझे इल्म नहीं¹⁰⁰ मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूँ कि

تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿۳۵﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ

नादान न बन अर्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि तुझे से वोह चीज़ मांगूँ जिस का

لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنَّ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿۳۶﴾ قِيلَ

मुझे इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़ो और रहम न करे तो मैं ज़ियांकार (नुक्सान उठाने वाला) हो जाऊँ फ़रमाया गया

يُنُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّنْ مَعَكَ ۗ وَ

ऐ नूह कश्ती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतों के साथ¹⁰¹ जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरोहों पर¹⁰² और

أُمَّةٍ سَمِعْتَهُمْ ثُمَّ يَسْأَلُهُمْ مَّا عَذَابُ الْيَوْمِ ﴿۳۷﴾ تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ

कुछ गुरोह वोह हैं जिन्हें हम दुनिया बरतने देंगे¹⁰³ फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा¹⁰⁴ येह ग़ैब की ख़बरें हैं

95 : ⁶ महीने तमाम ज़मीन का तवाफ़ कर के 96 : जो मौसिल या शाम की हुदूद में वाकेअ है, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام कश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुहर्रम को कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी तो आप ने उस के शुक्र का रोज़ा रखा और अपने तमाम साथियों को भी रोज़े का हुक्म फ़रमाया । 97 : और तू ने मुझे से मेरे और मेरे घर वालों की नजात का वा'दा फ़रमाया है 98 : तो इस में क्या दिक्मत है ? शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का बेटा कन्आन मुनाफ़ि़क़ था और आप के सामने अपने आप को मोमिन ज़ाहिर करता था अगर वोह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप **اَللّٰهُ** तअ़ाला से उस के नजात की दुआ न करते । (مبارک) 99 : इस से साबित हुवा कि नसबी क़राबत से दीनी क़राबत ज़ियादा क़वी है । 100 : कि वोह मांगने के काबिल है या नहीं । 101 : इन बरकतों से आप की ज़ुरियत (औलाद) और आप के मुत्तबिइन की कसरत मुराद है कि ब कसरत अम्बिया और अइम्मए दीन आप की नस्ले पाक से हुए, उन की निस्बत फ़रमाया कि येह बरकात । 102 : मुहम्मद बिन का'ब कुरज़ी ने कहा कि इन गुरोहों में क़ियामत तक होने वाला हर एक मोमिन दाख़िल है । 103 : इस से हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द पैदा होने वाले काफ़िर गुरोह मुराद हैं जिन्हें **اَللّٰهُ** तअ़ाला उन की मीआदों तक फ़राख़िये ऐश (लम्बी ज़िन्दगी) और वुस्अते रिज़क अता फ़रमाएगा । 104 : आख़िरत में ।

نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا ۝

कि हम तुम्हारी तरफ़ वह्य करते हैं¹⁰⁵ उन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी कौम इस¹⁰⁶ से पहले

فَاصْبِرْ ۝ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ۝ (३९) وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۝ قَالَ

तो सब्र कर¹⁰⁷ बेशक भला अन्जाम परहेज़ गारों का¹⁰⁸ और आद की तरफ़ उन के हमकौम हूद को¹⁰⁹ कहा

يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۝ إِن أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ۝

ऐ मेरी कौम **ALLAH** को पूजो¹¹⁰ उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तुम तो निरे मुफ़्तरी (बिल्कुल झूटे इल्जाम आइद करने वाले) हो¹¹¹

يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝ إِن أَجْرِي إِلَّا عَلَىٰ الَّذِي فَطَرَنِي ۝ أَفَلَا

ऐ कौम मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरी मजदूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया¹¹² तो क्या

تَعْقِلُونَ ۝ (५१) وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ

तुम्हें अक्ल नहीं¹¹³ और ऐ मेरी कौम अपने रब से मुआफ़ी चाहो¹¹⁴ फिर उस की तरफ़ रुजूअ लाओ तुम पर

السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा¹¹⁵ और जुर्म करते हुए

105 : यह ख़िताब सय्यदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को फ़रमाया । **106** : ख़बर देने **107** : अपनी कौम की ईज़ाओं पर जैसा कि नूह **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने अपनी कौम की ईज़ाओं पर सब्र किया । **108** : कि दुन्या में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर और आख़िरत में मुसाब व माज़ूर (अज्रो सवाब के मुस्तहक़) । **109** : नबी बना कर भेजा, हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** को "أَخ" (भाई) ब ए'तिबारे नसब फ़रमाया गया, इसी लिये हज़रते मुतर्जिम **قُدَيْسِ بْنِ سَيِّدَةَ** ने इस लफ़्ज़ का तरजमा हमकौम किया "أَعْلَى اللَّهِ مَقَامَهُ" (**ALLAH** तआला इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए) । **110** : उस की तौहीद के मो'तकिद रहो, उस के साथ किसी को शरीक न करो । **111** : जो बुतों को खुदा का शरीक बताते हो । **112** : जितने रसूल तशरीफ़ लाए सब ने अपनी कौमों से येही फ़रमाया और नसीहत ख़ालिसा वोही है जो किसी तमअ से न हो । **113** : इतना समझ सको कि जो महज़ बे गरज़ नसीहत करता है वोह यकीनन ख़ैर ख़्वाह और सच्चा है । बातिल कार जो किसी को गुमराह करता है ज़रूर किसी न किसी गरज़ और किसी न किसी मक्सद से करता है । इस से हक़ व बातिल में ब आसानी तमीज़ की जा सकती है । **114** : ईमान ला कर । जब कौमे आद ने हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की दा'वत क़बूल न की तो **ALLAH** तआला ने उन के कुफ़्र के सबब तीन साल तक बारिश मौकूफ़ कर दी और निहायत शदीद क़हूत नुमुदार हुवा और उन की औरतों को बांझ कर दिया, जब यह लोग बहुत परेशान हुए तो हज़रते हूद **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने वा'दा फ़रमाया कि अगर वोह **ALLAH** पर ईमान लाएं और उस के रसूल की तस्दीक़ करें और उस के हुज़ूर तौबा व इस्तिफ़ार करें तो **ALLAH** तआला बारिश भेजेगा और उन की ज़मीनों को सर सब्ज़ो शादाब कर के ताज़ा ज़िन्दगी अत्ता फ़रमाएगा और कुव्वत व औलाद देगा । हज़रते इमामे हसन **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** एक मरतबा अमीरे मुआविया **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से (हज़रते) अमीरे मुआविया के एक मुलाज़िम ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूँ मगर मेरे कोई औलाद नहीं, मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस से **ALLAH** मुझे औलाद दे । आप ने फ़रमाया : इस्तिफ़ार पढ़ा करो । उस ने इस्तिफ़ार की यहां तक कसरत की, कि रोज़ाना सात सो मरतबा इस्तिफ़ार पढ़ने लगा, इस की बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुए । यह ख़बर हज़रते मुआविया को हुई तो उन्होंने ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तू ने हज़रत इमाम से यह क्यूँ न दरयाफ़्त किया कि येह अमल हुज़ूर ने कहां से फ़रमाया ? दूसरी मरतबा जब उस शख़्स को इमाम से नियाज़ हासिल हुवा तो उस ने येह दरयाफ़्त किया : इमाम ने फ़रमाया कि तू ने हज़रते हूद का कौल नहीं सुना जो उन्होंने ने फ़रमाया : "يَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ" (तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा) और हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** का येह इर्शाद : "يُسَيِّدُكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ" (माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा) **फ़ाएदा** : कसरते रिज़क़ और हुसूले औलाद के लिये इस्तिफ़ार का ब कसरत पढ़ना कुरआनी अमल है । **115** : माल व औलाद के साथ ।

مُجْرِمِينَ ﴿٥١﴾ قَالَ الْيَهُودُ مَا جِئْنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا

रू गर्दानी न करो¹¹⁶ बोले ऐ हूद तुम कोई दलील ले कर हमारे पास न आए¹¹⁷ और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने खुदाओं को छोड़ने

عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٢﴾ إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ

के नहीं न तुम्हारी बात पर यकीन लाएँ हम तो येही कहते हैं कि हमारे किसी खुदा की

الِهَتِنَا بِسُوءٍ ۞ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا

तुम्हें बुरी झपट (पकड़) पहुंची¹¹⁸ कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूँ उन सब से जिन्हें

تُشْرِكُونَ ﴿٥٣﴾ مِنْ دُونِهِ فَكَيْدُونِي جَبِيحًا ثُمَّ لَا تُنظَرُونَ ﴿٥٤﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ

तुम अल्लाह के सिवा उस का शरीक ठहराते हो तुम सब मिल कर मेरा बुरा चाहे¹¹⁹ फिर मुझे मोहलत न दो¹²⁰ मैं ने अल्लाह पर

عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۞ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۞ إِنَّ رَبِّي

भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब कोई चलने वाला नहीं¹²¹ जिस की चोटी उस के कब्ज़ए कुदरत में न हो¹²² बेशक मेरा रब

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٥﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ

सीधे रास्ते पर मिलता है फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़

إِلَيْكُمْ ۞ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۞ إِنَّ

ले कर भेजा गया¹²³ और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों को ले आएगा¹²⁴ और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे¹²⁵ बेशक

رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ

मेरा रब हर शै पर निगहबान है¹²⁶ और जब हमारा हुक्म आया हम ने हूद और उस के

116 : मेरी दा'वत से। 117 : जो तुम्हारे दा'वे की सिहहत पर दलालत करती और येह बात उन्हीं ने बिल्कुल ग़लत और झूट कही थी। हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हीं जो मो'जिज़ात दिखाए थे उन सब से मुकर गए। 118 : या'नी तुम जो बुतों को बुरा कहते हो, इस लिये उन्हीं ने तुम्हें दीवाना कर दिया, मुराद येह है कि अब जो कुछ कहते हो येह दीवानगी की बातें हैं। (مَعَادُ اللَّهِ) 119 : या'नी तुम और वोह जिन्हें तुम मा'बूद समझते हो सब मिल कर मुझे ज़रूर पहुंचाने की कोशिश करो। 120 : मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं और मुझे तुम्हारी शौकतो कुव्वत से कुछ अन्देशा नहीं, जिन को तुम मा'बूद कहते हो वोह जमाद व बेजान हैं, न किसी को नफ़ पहुंचा सकते हैं न ज़रूर, उन की क्या हकीकत कि वोह मुझे दीवाना कर सकते। येह हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है कि आप ने एक ज़बर दस्त ज़ब्बार साहिबे कुव्वतो शौकत कौम से जो आप के खून की प्यासी और जान की दुश्मन थी, इस तरह के कलिमात फ़रमाए और अस्लन खौफ़ न किया और वोह कौम वा वुजूद इन्तिहाई अदावत और दुश्मनी के आप को ज़रूर पहुंचाने से आज़िज़ रही। 121 : इस में बनी आदम और हैवान सब आ गए। 122 : या'नी वोह सब का मालिक है और सब पर ग़ालिब और कादिर व मुतसर्रिफ़ है। 123 : और हुज्जत साबित हो चुकी। 124 : या'नी अगर तुम ने ईमान से ए'राज़ किया और जो अहकाम में तुम्हारी तरफ़ लाया हूँ उन्हें क़बूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक करेगा और बजाए तुम्हारे एक दूसरी कौम को तुम्हारे दियार व अम्वाल का वाली बनाएगा जो उस की तौहीद के मो'तकिद हों और उस की इबादत करें। 125 : क्यूं कि वोह इस से पाक है कि उसे कोई ज़रूर पहुंच सके, लिहाज़ा तुम्हारे ए'राज़ का जो ज़रूर है वोह तुम्हीं को पहुंचेगा। 126 : और किसी का कौल, फ़े'ल उस से मख़फ़ी नहीं। जब कौमे हूद नसीहत पज़ीर न हुई तो बारगाहे क़दरी बरहक़ से उन के अज़ाब का हुक्म नाफ़िज़ हुआ।

مِنْهُ رَاحَةٌ فَسَنَ يَصْرِفُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتَهُ ۚ فَمَا تَزِيدُنِي غَيْرَ

अपने पास से रहमत बख्शी¹³⁷ तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूँ¹³⁸ तो तुम मुझे सिवा नुक़सान के कुछ न

تَحْسِيرٍ ۚ وَيَقَوْمٍ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فذَرُوهَا تَاكُلْ فِي أَرْضِ

बढ़ाओगे¹³⁹ और ऐ मेरी कौम यह **अल्लाह** का नाक़ा (ऊंटनी) है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि **अल्लाह** की ज़मीन में

اللَّهُ وَلَا تَسْؤُهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۚ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ

खाए और इसे बुरी तरह हाथ न लगाना कि तुम को नज़दीक अज़ाब पहुंचेगा¹⁴⁰ तो उन्होंने¹⁴¹ उस की कूचें काटी (पाउं काट दिये) तो सालेह ने कहा

تَسْعَوْانِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذَٰلِكَ وَعَدُّ غَيْرُ مَكْدُوبٍ ۚ فَلَمَّا جَاءَ

अपने घरों में तीन दिन और बरत लो (फ़ाएदा उठा लो)¹⁴² यह वा'दा है कि झूटा न होगा¹⁴³ फिर जब

أَمْرًا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ

हमारा हुक्म आया हम ने सालेह और उस के साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमा कर¹⁴⁴ बचा लिया और उस दिन की

يَوْمٍ مِّنْ دُونِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۚ وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ

रुस्वाई से बेशक तुम्हारा रब क़वी इज़्ज़त वाला है और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया¹⁴⁵

فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَيِّمِينَ ۚ كَانُوا لَمْ يَعْتَوُوا فِيهَا إِلَّا إِنَّا شُودًا

तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए गोया कभी यहां बसे ही न थे सुन लो बेशक समूद

كَفَرُوا وَإِرْبَاهِيمَ ۚ إِلَّا بَعْدَ الشُّوْدِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ

अपने रब से मुन्किर हुए अरे ला'नत हो समूद पर और बेशक हमारे फिरिश्ते इब्राहीम के पास¹⁴⁶

بِالْبَشَرِ قَالُوا اسْلُبْنَا ۚ قَالَ سَلِّمْ فَلَيْتَ أَنْ جَاءَ بِعَجَلٍ حَنِيدٍ ۚ

मुज़दा ले कर आए बोले सलाम कहा¹⁴⁷ सलाम फिर कुछ देर न की, कि एक बछड़ा भुना ले आए¹⁴⁸

¹³⁷ : हिकमत व नुबुव्वत अता की । ¹³⁸ : रिसालत की तब्लीग़ और बुत परस्ती से रोकने में । ¹³⁹ : या'नी मुझे तुम्हारे ख़सारे का तजरिबा और ज़ियादा होगा । ¹⁴⁰ : समूद ने हज़रते सालेह **عَلَيْهِ السَّلَامُ** से मो'जिजा तलब किया था (जिस का बयान सूरए आ'राफ में हो चुका है) । आप ने **अल्लाह** तआला से दुआ की तो पथ्थर से ब हुक्मे इलाही नाक़ा पैदा हुवा, यह नाक़ा उन के लिये आयत (निशानी) व मो'जिजा था । इस आयत में उस नाक़ा (ऊंटनी) के मुतअल्लिक अहक़ाम इश्राद फ़रमाए गए कि इसे ज़मीन में चरने दो और कोई आज़ार (तक्लीफ़) न पहुंचाओ वरना दुन्या ही में गिरिफ्तारे अज़ाब होंगे और मोहलत न पाओगे । ¹⁴¹ : हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और चहार शम्बा (बुध) को ¹⁴² : या'नी जुमुआ तक जो कुछ दुन्या का ऐश करना है कर लो शम्बा (हफ़्ते) को तुम पर अज़ाब आएगा । पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे ज़र्द हो जाएंगे, दूसरे रोज़ सुर्ख़ और तीसरे रोज़ या'नी जुमुआ को सियाह और शम्बा को अज़ाब नाज़िल हो जाएगा । ¹⁴³ : चुनान्चे ऐसा ही हुवा । ¹⁴⁴ : इन बलाओं से ¹⁴⁵ : या'नी होलनाक आवाज़ ने जिस की हैबत से उन के दिल फट गए और वोह सब के सब मर गए । ¹⁴⁶ : सादा रू नी जवानों की हसीन शक्तों में हज़रते इस्हाक व हज़रते या'कूब **عَلَيْهِمَا السَّلَام** की पैदाइश का ¹⁴⁷ : हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ¹⁴⁸ : मुफ़स्सरीन ने कहा है कि हज़रते

فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَّرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا

फिर जब देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ नहीं पहुंचते उन को ऊपरी (अजनबी) समझा और जी ही जी में उन से डरने लगा बोले

لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ۗ وَامْرَأَتُهُ قَابِيَةٌ فَضَحِكَتْ

डरिये नहीं हम कौमे लूत की तरफ¹⁴⁹ भेजे गए हैं और उस की बीबी¹⁵⁰ खड़ी थी वोह हंसने लगी

فَبَشِّرْهُنَّ بِاسْحَقٍ ۗ وَمِنْ وَّرَاءِ اسْحَقٍ يَعْقُوبُ ۗ قَالَتْ يُوَيْلَىٰ آلِ الدُّ

तो हम ने उसे¹⁵¹ इस्हाक की खुश ख़बरी दी और इस्हाक के पीछे¹⁵² या'कूब की¹⁵³ बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा

وَأَنَا عَجُوزٌ ۖ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا ۗ إِنَّ هَذَا الشَّيْءُ عَجِيبٌ ۗ قَالُوا

और मैं बूढ़ी हूँ¹⁵⁴ और यह है मेरे शोहर बूढ़े¹⁵⁵ बेशक यह तो अचम्भे (तअज्जुब) की बात है फिरिस्ते बोले

أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمْتُ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۗ

क्या **अल्लाह** के काम का अचम्भा (तअज्जुब) करती हो **अल्लाह** की रहमत और उस की बरकतें तुम पर ऐ इस घर वालो¹⁵⁶

إِنَّهُ حَبِيدٌ مَّجِيدٌ ۗ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ

बेशक वोही है सब ख़ुबियों वाला इज्जत वाला फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ जाइल (दूर) हुवा और उसे खुश ख़बरी मिली

يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ۗ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۗ يَا إِبْرَاهِيمُ

हम से कौमे लूत के बारे में झगड़ने लगा¹⁵⁷ बेशक इब्राहीम तहम्मूल वाला बहुत आहें करने वाला रुजूअ लाने वाला है¹⁵⁸ ऐ इब्राहीम

इब्राहीम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** बहुत ही मेहमान नवाज़ थे, बिगैर मेहमान के खाना तनावुल न फ़रमाते। उस वक़्त ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि पन्दरह

रोज़ से कोई मेहमान न आया था, आप इस ग़म में थे, उन मेहमानों को देखते ही आप ने उन के लिये खाना लाने में जल्दी फ़रमाई, चूँकि आप

के यहां गाएँ ब कसरत थीं इस लिये बछड़े का भुना हुवा गोशत सामने लाया गया। फ़ाएदा : इस से मा'लूम हुवा कि गाय का गोशत हज़रते

इब्राहीम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** के दस्तर ख़ाना पर ज़ियादा आता था और आप उस को पसन्द फ़रमाते थे, गाय का गोशत खाने वाले अगर सुन्ते

इब्राहीमी अदा करने की नियत करें तो मज़ीद सवाब पाएँ। 149 : अज़ाब करने के लिये 150 : हज़रते सारह पसे पर्दा 151 : उस के फ़रज़न्द

152 : हज़रते इस्हाक के फ़रज़न्द 153 : हज़रते सारह को खुश ख़बरी देने की वजह यह थी कि औलाद की खुशी औरतों को मर्दों से ज़ियादा

होती है और नीज़ यह भी सबब था कि हज़रते सारह के कोई औलाद न थी और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के फ़रज़न्द हज़रते इस्माईल

عَلَيْهِ السَّلَام मौजूद थे, इस बिशारत के ज़िम्न में एक बिशारत यह भी थी कि हज़रते सारह की उम्र इतनी दराज़ होगी कि वोह पोते को भी देखेंगी।

154 : मेरी उम्र नव्वे से मुतजाविज़ हो चुकी है। 155 : जिन की उम्र एक सो बीस साल की हो गई है। 156 : फिरिस्तों के कलाम के

मा'ना यह है कि तुम्हारे लिये क्या "जाए तअज्जुब" (तअज्जुब की बात) है ! तुम उस घर में हो जो मो'जिज़ात और ख़वारिके अ़दात

(करामात) और **अल्लाह** तआला की रहमतों और बरकतों का मौरिद (मक़ामे नुज़ूल) बना हुवा है। मस्अला : इस आयत से साबित हुवा

कि बीबियां अहले बैत में दाख़िल हैं। 157 : या'नी कलाम व सुवाल करने लगा और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का मुजादला (तकार

करना) यह था कि आप ने फिरिस्तों से फ़रमाया कि कौमे लूत की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे ? फिरिस्तों

ने कहा नहीं। फ़रमाया : अगर चालीस हों ? उन्होंने ने कहा : जब भी नहीं। आप ने फ़रमाया : अगर तीस हों ? उन्होंने ने कहा : जब भी नहीं।

आप इस तरह फ़रमाते रहे यहां तक कि आप ने फ़रमाया : अगर एक मर्द मुसल्मान मौजूद हो तब हलाक कर दोगे ? उन्होंने ने कहा नहीं। तो

आप ने फ़रमाया : उस में लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** हैं। इस पर फिरिस्तों ने कहा : हमें मा'लूम है जो वहां हैं, हम हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** को और उन

أَعْرَضَ عَنْ هَذَا ۚ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرٌ رَبِّكَ ۚ وَإِنَّهُمْ لَبِهِمُ عَذَابٌ

इस खयाल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अज़ाब आने वाला है

غَيْرَ مَرْدُودٍ ﴿٤٦﴾ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئِئًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ

कि फेरा न जाएगा और जब लूत के पास हमारे फ़िरिश्ते आए¹⁵⁹ उसे उन का ग़म हुआ और उन के सबब दिलतंग

ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٤٧﴾ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ

हुवा और बोला यह बड़ी सख़्ती का दिन है¹⁶⁰ और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती आई

وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۗ قَالَ يَاقَوْمِ هُوَ لَبِئْسَ مَا تَفْعَلُونَ ۗ

और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आदत पड़ी थी¹⁶¹ कहा ऐ क़ौम यह मेरी क़ौम की बेटियां हैं यह

أَطَهَّرْ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ فِي ضَيْفِي ۗ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो **اللَّهُ** से डरो¹⁶² और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो क्या तुम में एक आदमी भी

رَأْسِيذٌ ﴿٤٨﴾ قَالُوا الْقَدْ عَلِمْتَ مَالَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ

नेक चलन नहीं बोले तुम्हें मा'लूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई हक़ नहीं¹⁶³ और तुम ज़रूर जानते हो

مَا نُرِيدُ ﴿٤٩﴾ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ إِيَّائِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٥٠﴾ قَالُوا

जो हमारी ख़्वाहिश है बोला ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता¹⁶⁴ फ़िरिश्ते बोले

के घर वालों को बचाएंगे सिवाए उन की औरत के। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ का मक़सद यह था कि आप अज़ाब में ताख़ीर चाहते थे ताकि उस बस्ती वालों को कुफ़्र व मअ़सी से बाज़ आने के लिये एक फ़ुरसत और मिल जाए, चुनान्चे हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की सिफ़त में इश़ाद होता है : 158 : इन सिफ़ात से आप की रिक्कते क़ल्ब और आप की राफ़त व रहमत मा'लूम होती है जो इस मुबाहसे का सबब हुई। फ़िरिश्तों ने कहा : 159 : हसीन सूरतों में। और हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَامُ ने उन की हैअत और जमाल को देखा तो क़ौम की ख़बासत व बद अ़मली का खयाल कर के 160 : मरवी है कि मलाएक को हुक्मे इलाही यह था कि वोह क़ौमे लूत को उस वक़्त तक हलाक न करें जब तक कि हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَامُ खुद उस क़ौम की बद अ़मली पर चार मरतबा गवाही न दें, चुनान्चे जब यह फ़िरिश्ते हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَامُ से मिले तो आप ने उन से फ़रमाया कि क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का हाल मा'लूम न था ! फ़िरिश्तों ने कहा : इन का क्या हाल है ? आप ने फ़रमाया : मैं गवाही देता हूँ कि अमल के ए'तिबार से रूए ज़मीन पर यह बद तरीन बस्ती है और यह बात आप ने चार मरतबा फ़रमाई, हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की औरत जो काफ़िरा थी निकली और उस ने अपनी क़ौम को जा कर ख़बर दी कि हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَامُ के यहां ऐसे ख़ूबरू और हसीन मेहमान आए हैं जिन की मिस्ल अब तक कोई शख़्स नज़र नहीं आया। 161 : और कुछ शर्मों हया बाकी न रही थी। हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَامُ ने 162 : और अपनी बीबियों से तमतोअ़ (फ़ाएदा हासिल) करो कि यह तुम्हारे लिये हलाल है। हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने उन की औरतों को जो क़ौम की बेटियां थीं बुजुर्गाना शफ़क़त से अपनी बेटियां फ़रमाया ताकि इस हुस्ने अख़लाक़ से वोह फ़ाएदा उठाएं और हम्िय्यत (गैरत) सीखें। 163 : या'नी हमें उन की तरफ़ रज़बत नहीं। 164 : या'नी मुझे अगर तुम्हारे मुक़ाबले की ताक़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुक़ाबला व मुक़ातला करता। हज़रते लूत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ने अपने मकान का दरवाज़ा बन्द कर लिया था और अन्दर से येह गुफ़्तू फ़रमा रहे थे, क़ौम ने चाहा कि दीवार तोड़े, फ़िरिश्तों ने आप का रन्जो इज़्तिराब देखा तो।

يَلُوطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوْا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاهْلِكَ بِقَطْعٍ مِّنَ الْيَلِّ

ऐ लूत हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं¹⁶⁵ वोह तुम तक नहीं पहुंच सकते¹⁶⁶ तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا اَمْرًا تَكُ اِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا اَصَابَهُمْ اِنَّ

और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे¹⁶⁷ सिवाए तुम्हारी औरत के उसे भी वोही पहुंचना है जो इन्हें पहुंचेगा¹⁶⁸ बेशक

مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا

इन का वा'दा सुबह के वक़्त है¹⁶⁹ क्या सुबह करीब नहीं फिर जब हमारा हुकम आया हम ने

عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارًا مِّنْ سِجِّيلٍ لِّمَنْصُوْدٍ ﴿٨٢﴾

उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया¹⁷⁰ और उस पर कंकड़ के पथर लगातार बरसाए

مُسُوْمَةً عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾ وَاِلَى مَدِيْنَ

जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं¹⁷¹ और वोह पथर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं¹⁷² और¹⁷³ मद्यन की तरफ़

اَخَاهُمْ شَعِيْبًا قَالَ يَقُوْمُ اَعْبُدُوْا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهُ وَلَا

उन के हमक़ौम शुऐब को¹⁷⁴ कहा ऐ मेरी क़ौम **اعْبُدُوْا** को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं¹⁷⁵ और

تَتَّقُوْا الْهَيْكَالَ وَالْبِيْزَانَ اِنِّيْ اَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَاِنِّيْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ

नाप और तोल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल (मालदार व खुशहाल) देखता हूँ¹⁷⁶ और मुझे तुम पर

165 : तुम्हारा पाया मज़बूत है, हम इन लोगों को अज़ाब करने के लिये आए हैं, तुम दरवाज़ा खोल दो और हमें और इन्हें छोड़ दो **166** :

और तुम्हें कुछ ज़रूर नहीं पहुंचा सकते। हज़रत ने दरवाज़ा खोल दिया, क़ौम के लोग मकान में घुस आए। हज़रत जिब्रिल ने ब हुकमे इलाही अपना बाजू उन के मुंह पर मारा सब अन्धे हो गए और हज़रत लूत عَلَيْهِ السَّلَام के मकान से निकल कर भागे, उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था और येह कहते जाते थे : हाए हाए लूत के घर में बड़े जादूगर हैं, उन्हीं ने हमें जादू कर दिया। फिरशतों ने हज़रत लूत عَلَيْهِ السَّلَام से कहा :

167 : इस तरह आप के घर के तमाम लोग चले जाएं **168** : हज़रत लूत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : येह अज़ाब कब होगा ? हज़रत जिब्रिल ने कहा :

169 : हज़रत लूत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि मैं तो इस से जल्दी चाहता हूँ। हज़रत जिब्रिल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : **170** : या'नी उलट दिया इस

तरह कि हज़रत जिब्रिल عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ौमे लूत के शहर जिस तब्कए ज़मीन पर थे उस के नीचे अपना बाजू डाला और उन पांचों शहरों को

जिन में सब से बड़ा सदूम था और उन में चार लाख आदमी बसते थे, इतना ऊंचा उठाया कि वहां के कुत्तों और मुर्गों की आवाज़ें आस्मान

पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तगी से उठाया कि किसी बरतन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला बेदार न हुवा, फिर उस बुलन्दी से

उस को औंधा कर के पलटा **171** : उन पथरों पर ऐसा निशान था जिस से वोह दूसरों से मुमताज़ थे। क़तादा ने कहा कि उन पर सुख़ खुतूत

थे। हसन व सुदी का क़ौल है कि उन पर मोहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल येह है कि जिस पथर से जिस शख्स की हलाकत मन्ज़ूर

थी उस का नाम उस पथर पर लिखा था। **172** : या'नी अहले मक्का से। **173** : हम ने भेजा बाशिन्दगाने शहर **174** : आप ने अपनी

क़ौम से **175** : पहले तो आप ने तौहीद व इबादत की हिदायत फ़रमाई कि वोह तमाम उमूर में सब से अहम है। इस के बा'द जिन अ़ादते

क़बीहा में वोह मुब्तला थे उस से मन्ज़ूर फ़रमाया और इर्शाद किया **176** : ऐसे हाल में आदमी को चाहिये कि ने'मत की शुक्र गुज़ारी करे और

दूसरों को अपने माल से फ़ाएदा पहुंचाए न कि उन के हुक्क़ में कमी करे, ऐसी हालत में इस ख़ियानत की अ़ादत से अन्देशा है कि कहीं इस

ने'मत से महरूम न कर दिये जाओ।

عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٣﴾ وَيَقَوْمٍ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْبِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَ

घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का डर है¹⁷⁷ और ऐ मेरी क़ौम नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और

لَا تَبْخُسُوا النَّاسَ أَمْشِيَاءَ هُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

लोगों को उन की चीजें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۗ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

अल्लाह का दिया जो बच रहे वोह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यकीन हो¹⁷⁸ और मैं कुछ तुम पर निगहबान नहीं¹⁷⁹

قَالُوا يَسْعَيْبُ أَصْلُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَأَنْ

बोले ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के खुदाओं को छोड़ दें¹⁸⁰ या

تَفْعَلِي فِي أَمْوَالِنَا مَنَشُوءًا ۖ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يَقَوْمِ

अपने माल में जो चाहें न करे¹⁸¹ हां जी तुम्हीं बड़े अक्ल मन्द नेक चलन हो कहा ऐ मेरी क़ौम

أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيْنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَأَيْتُم مِّنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۖ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से एक रोशन दलील पर हूँ¹⁸² और उस ने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी¹⁸³

وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَنْهُ ۖ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ

और मैं नहीं चाहता हूँ कि जिस बात से तुम्हें मन्अ करता हूँ आप उस का ख़िलाफ़ करने लागू¹⁸⁴ मैं तो जहां तक बने संवारना ही

مَا اسْتَطَعْتُ ۖ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की तरफ़ से है मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूअ होता हूँ

177 : कि जिस से किसी को रिहाई मुयस्सर न हो और सब के सब हलाक हो जाएं, येह भी हो सकता है कि इस दिन के अज़ाब से अज़ाबे आख़िरत मुराद हो । 178 : या'नी माले हुराम तर्क करने के बा'द हलाल जिस कदर भी बचे वोही तुम्हारे लिये बेहतर है । हज़रते इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि पूरा तोलने और नापने के बा'द जो बचे वोह बेहतर है । 179 : कि तुम्हारे अफ़्वाल पर दारो गीर (मुआख़ज़ा) करूँ । उलमा ने फ़रमाया कि बा'ज अम्बिया को हर्ब (जिहाद व क़िताल) की इजाज़त थी जैसे हज़रते मूसा, हज़रते दावूद, हज़रते सुलैमान عَلَيْهِمُ السَّلَام के हलीम व ग़ैरहुम, बा'ज वोह थे जिन्हें हर्ब (क़िताल) का हुक्म न था, हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام उन्हीं में से हैं, तमाम दिन बा'ज फ़रमाते और शब तमाम नमाज़ में गुज़ारते, क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ाएदा ? आप फ़रमाते : नमाज़ ख़ूबियों का हुक्म देती है बुराइयों से मन्अ करती है, तो इस पर वोह तमस्खुर से (मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह कहते जो अगली आयत में मज़कूर है । 180 : बुत परस्ती न करे 181 : मतलब येह था कि हम अपने माल के मुख़ार हैं, चाहे कम नापें चाहे कम तोलें । 182 : बसौरत व हिदायत पर 183 : या'नी नुबुव्वत व रिसालत या माले हलाल और हिदायत व मा'रिफ़त, तो येह कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें बुत परस्ती और गुनाहों से मन्अ न करूँ क्यूँ कि अम्बिया इसी लिये भेजे जाते हैं । 184 : इमाम फ़ख़रुद्दीन राजी عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ ने फ़रमाया कि क़ौम ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام के हलीम व रशीद होने का ए'तिराफ़ किया था और उन का येह कलाम इस्तिहज़ा (मज़ाक़) न था, बल्कि मुद्हा येह था कि आप बा वुजूद हिल्म व कमाले अक्ल के हम को अपने माल में अपने हस्बे मरज़ी तसर्फ़ करने से क्यूँ मन्अ फ़रमाते हैं ? इस का जवाब जो हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया उस का हासिल येह है कि जब तुम मेरे कमाले अक्ल के मो'तरिफ़ हो तो तुम्हें येह समझ लेना चाहिये कि मैं ने अपने लिये जो

وَلِيقَوْمٍ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ

और ऐ मेरी कौम तुम्हें मेरी ज़िद यह न कमवा दे (बुरा काम करा दे) कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह की कौम या

قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ ۖ وَمَا قَوْمٌ لَوْ طَمَّ مِنْكُمْ بِبَعِيدٍ ۙ (۸۹) وَاسْتَغْفِرُوا

हूद की कौम या सालह की कौम पर और लूत की कौम तो कुछ तुम से दूर नहीं¹⁸⁵ और अपने रब से

رَبِّكُمْ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ ۖ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۙ (۹۰) قَالُوا اإِسْعِيبُ مَا

मुआफ़ी चाहो फिर उस की तरफ़ रुजू लाओ बेशक मेरा रब मेहरबान महबूत वाला है बोले ऐ शुऐब

نَفَقَهُ كَثِيرًا مِمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرُكَ فِينَا ضَعِيفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ

हमारी समझ में नहीं आती तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं¹⁸⁶ और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता¹⁸⁷

لَرَجَسْنَاكَ ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ۙ (۹۱) قَالَ لِيَقَوْمٍ أَرَاهُطَىٰ أَعْرُ عَلَيْكُمْ

तो हम ने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इज़्ज़त नहीं कहा ऐ मेरी कौम क्या तुम पर मेरे कुम्बे का दबाव

مِّنَ اللَّهِ ۖ وَاتَّخَذْتُمُوهَا وِرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ

अल्लाह से ज़ियादा है¹⁸⁸ और उसे तुम ने अपनी पीठ पीछे डाल रखा¹⁸⁹ बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के

مُحِيطٌ ۙ (۹۲) وَلِيقَوْمٍ أَعْبَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ

बस में है और ऐ कौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूँ अब जाना (जानना) चाहते हो

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ

किस पर आता है वोह अज़ाब कि उसे रुखा करेगा और कौन झूटा है¹⁹⁰ और इन्तिज़ार करो¹⁹¹ मैं भी तुम्हारे साथ

رَاقِبٌ ۙ (۹۳) وَلَبَّاءَ أَمْرًا نَّجِيًّا شَعِيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةِ

इन्तिज़ार में हूँ और जब¹⁹² हमारा हुक्म आया हम ने शुऐब और उस के साथ के मुसलमानों को अपनी रहमत फ़रमा कर

बात पसन्द की है वोह वोही होगी जो सब से बेहतर हो और वोह खुदा की तौहीद और नाप तोल में तर्क ख़ियानत है, मैं इस का पाबन्दी

से आमिल हूँ तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि येही तरीका बेहतर है। 185 : उन्हें कुछ ज़ियादा ज़माना नहीं गुज़रा है न वोह कुछ दूर के

रहने वाले थे तो उन के हाल से इब्रत हासिल करो। 186 : कि अगर हम आप के साथ कुछ ज़ियादती करें तो आप में मुदाफ़अत की

ताकत नहीं। 187 : जो दीन में हमारा मुवाफ़िक है और जिस को हम अज़ीज़ रखते हैं। 188 : कि अल्लाह के लिये तो तुम मेरे क़त्ल

से बाज़ न रहे और मेरे कुम्बे की वजह से बाज़ रहे और तुम ने अल्लाह के नबी का तो एहतिराम न किया और कुम्बे का एहतिराम

किया। 189 : और उस के हुक्म की कुछ परवाह न की। 190 : अपने दआवी (दा'वों) में या'नी तुम्हें जल्द मा'लूम हो जाएगा कि मैं

हक़ पर हूँ या तुम और अज़ाबे इलाही से शक़ी की शक़ावत (बद बख़्त की बद बख़्ती) ज़ाहिर हो जाएगा। 191 : आक़िबते अम्र और

अन्जामे कार का 192 : उन के अज़ाब और हलाक के लिये।

مِمَّا جَ وَآخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثِينَ ۙ (۹۳)

बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया¹⁹³ तो सुबह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए

كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا بُعْدَ الْبُدَيْنِ كَمَا بَعَدَتْ شُؤْدُ ۙ (۹۵) وَلَقَدْ

गोया कभी वहां बसे ही न थे अरे दूर हों मद्यन जैसे दूर हुए समूद¹⁹⁴ और बेशक

أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۙ (۹۶) إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ

हम ने मूसा को अपनी आयतों¹⁹⁵ और सरीह ग़लबे के साथ फिरऔन और उस के दरबारियों की तरफ़ भेजा

فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۗ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۙ (۹۷) يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ

तो वोह फिरऔन के कहने पर चले¹⁹⁶ और फिरऔन का काम रास्ती (दुरुस्त व दियात दारी) का न था¹⁹⁷ अपनी क़ौम के आगे होगा क़ियामत के

الْقِيَامَةِ فَأُورَدَهُمُ النَّارَ ۗ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْبُورُودُ ۙ (۹۸) وَأَتَّبَعُوا فِي هَذِهِ

दिन तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा¹⁹⁸ और वोह क्या ही बुरा घाट उतरने का और उन के पीछे पड़ी इस जहान में

لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ۙ (۹۹) ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَىٰ

ला'नत और क़ियामत के दिन¹⁹⁹ क्या ही बुरा इन्'आम जो उन्हें मिला येह बस्तियों²⁰⁰ की ख़बरें हैं

نَقَصَهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ۙ (۱۰۰) وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا

कि हम तुम्हें सुनाते हैं²⁰¹ उन में कोई खड़ी है²⁰² और कोई कट गई²⁰³ और हम ने उन पर जुल्म न किया बल्कि खुद उन्होंने ने²⁰⁴

أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ

अपना बुरा किया तो उन के मा'बूद जिन्हें²⁰⁵ **ALLAH** के सिवा पूजते थे उन के कुछ काम न

193 : हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** ने हैबत नाक आवाज़ से कहा : "مَوْتُوا جَمِيعًا" सब मर जाओ ! इस आवाज़ की दहशत से उन के दम निकल गए और सब मर गए । 194 : **ALLAH** की रहमत से । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतों एक ही अज़ाब में मुब्तला नहीं की गई बजुज़ हज़रते शुऐब व सालेह **عَلَيْهِمَا السَّلَام** की उम्मतों के, लेकिन क़ौमे सालेह को उन के नीचे से होलनाक आवाज़ ने हलाक किया और क़ौमे शुऐब को ऊपर से । 195 : या'नी मो'जिज़ात 196 : और कुफ़्र में मुब्तला हुए और हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** पर इमाम न जाए । 197 : वोह खुली गुमराही में था क्यूं कि बा वुजूद बशर होने के खुदाई का दा'वा करता था और अलानिया ऐसे जुल्म और ऐसी सितम गारियां करता था जिस का शैतानी काम होना ज़ाहिर और यकीनी है, वोह कहां और खुदाई कहां ! और हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के साथ रुशदे हक्कानिय्यत थी, आप की सच्चाई की दलीलें, आयाते ज़ाहिरा व मो'जिज़ाते बाहिरा (साफ़ साफ़ आयतें और ज़बर दस्त मो'जिज़ात) वोह लोग मुआयना कर चुके थे, फिर भी उन्होंने ने आप की इत्तिबाअ से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह की इताअत की, तो जब वोह दुन्या में कुफ़्रो ज़लाल में अपनी क़ौम का पेशवा था ऐसे ही जहन्म में उन का इमाम होगा और 198 : जैसा कि उन्हें दरियाए नील में ला डाला था । 199 : या'नी दुन्या में भी मलज़न और आख़िरत में भी मलज़न । 200 : या'नी गुज़री हुई उम्मतों 201 : कि तुम अपनी उम्मत को उन की ख़बरें दो ताकि वोह उन से इज़त हासिल करें, उन बस्तियों की हालत खेतियों की तरह है कि 202 : उस के मकानों की दीवारें मौजूद हैं, खन्डर पाए जाते हैं, निशान बाक़ी हैं जैसे कि आद व समूद के दियार (बस्तियां) । 203 : या'नी कटी हुई खेती की तरह बिल्कुल बे नामो निशान हो गई और उस का कोई असर बाक़ी न रहा जैसे कि क़ौमे नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** के दियार । 204 : कुफ़्र व मअसी का इरतिकाब कर के 205 : जहल व गुमराही से

شَيْءٌ لَّهَا جَاءَ أَمْرٌ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ۝۱۱ وَكَذَلِكَ أَخْذُ

आए²⁰⁶ जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उन²⁰⁷ से उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा और ऐसी ही पकड़ है

رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۖ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ۝۱۲ إِنَّ

तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के जुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करी (सख्त) है²⁰⁸ बेशक

فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۖ ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ

इस में निशानी²⁰⁹ है उस के लिये जो आखिरत के अज़ाब से डरे वोह दिन है जिस में सब लोग²¹⁰

النَّاسِ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ۝۱۳ وَمَأْوَىٰ خَرَّةٍ إِلَّا لِاجِلٍ مَّعْدُودٍ ۝۱۴

इकट्ठे होंगे और वोह दिन हाज़िरी का है²¹¹ और हम उसे²¹² पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिये²¹³

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلِّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۖ فَبَيْنَهُمْ شِقَىٰ ۖ وَسَعِيدٌ ۝۱۵ فَأَمَّا

जब वोह दिन आएगा कोई बे हुक्मे खुदा बात न करेगा²¹⁴ तो उन में कोई बद बख्त है और कोई खुश नसीब²¹⁵ तो

الَّذِينَ شَقُوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ۝۱۶ خَلِدِينَ فِيهَا

वोह जो बद बख्त हैं वोह तो दोज़ख में हैं वोह उस में गधे की तरह रैंकें (चीखें चिल्लाएं)गे वोह उस में रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۖ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ

जब तक आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा²¹⁶ बेशक तुम्हारा रब

لِّبَايِرٍ ۝۱۷ وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فِي الْجَنَّةِ خَلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ

जब जो चाहे करे और वोह जो खुश नसीब हुए वोह जन्नत में हैं हमेशा उस में रहेंगे जब तक

السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۖ عَطَاءٌ غَيْرٌ مَّجْدُودٍ ۝۱۸

आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा²¹⁷ येह बख़्शिश है कभी खत्म न होगी

206 : और एक शम्मा (थोड़ा सा भी) अज़ाब दफ़्त न कर सके। 207 : बुतों और झूटे मा'बूदों 208 : तो हर ज़ालिम को चाहिये कि इन वाकिआत से इब्रत पकड़े और तौबा में जल्दी करे। 209 : इब्रत व नसीहत 210 : अगले पिछले हिसाब के लिये 211 : जिस में आस्मान वाले और ज़मीन वाले सब हाज़िर होंगे। 212 : या'नी रोज़े क़ियामत को 213 : या'नी जो मुद्दत हम ने बकाए दुन्या के लिये मुकर्रर फ़रमाई है उस के तमाम होने तक। 214 : तमाम खल्क साकित होगी, क़ियामत का दिन बहुत तवील होगा, उस में अहवाल मुख़लिफ़ होंगे, बा'ज अहवाल में तो शिद्दते हैबत से किसी को बे इज़ने इलाही बात ज़बान पर लाने की कुदरत न होगी और बा'ज अहवाल में इज़न दिया जाएगा कि लोग इज़न (इजाज़त) से कलाम करेंगे और बा'ज अहवाल में होल व दहशत कम होगी उस वक़्त लोग अपने मुआमलात में झगड़ेंगे और अपने मुक़द्दमात पेश करेंगे। 215 : शक़ीक बल्ख़ी قَدِينِ رَبِّهِ نَفَرَمَايَا : सआदत की पांच अलामतें हैं : (1) दिल की नरमी (2) कस्रते गिर्या (3) दुन्या से नफ़रत (4) उम्मीदों का कोताह होना (5) हया। और बद बख़ती की अलामतें भी पांच चीज़ें हैं : (1) दिल की सख़ी (2) आंख की खुशकी या'नी अदमे गिर्या (न रोना) (3) दुन्या की रबत (4) दराज़ उम्मीदें (5) बे हयाई। 216 : इतना और ज़ियादा रहेंगे और

فَلَاتُكُ فِي مَرِيَّةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ ۖ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ

तो ऐ सुनने वाले धोके में न पड़ उस से जिसे यह काफ़िर पूजते हैं²¹⁸ यह वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले

آبَاءُهُمْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَإِنَّا لَنُوفِّوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ۚ وَلَقَدْ

इन के बाप दादा पूजते थे²¹⁹ और बेशक हम इन का हिस्सा इन्हें पूरा फेर देंगे जिस में कमी न होगी और बेशक

آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ۖ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ

हम ने मूसा को किताब दी²²⁰ तो उस में फूट पड़ गई²²¹ अगर तुम्हारे रब की एक बात²²² पहले न हो चुकी होती

لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ ۖ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۚ وَإِنَّا لَنَسَائِلُ يَوْمَئِذٍ

तो जभी उन का फ़ैसला कर दिया जाता²²³ और बेशक वोह उस की तरफ़ से²²⁴ धोका डालने वाले शक में हैं²²⁵ और बेशक जितने हैं²²⁶ एक एक को

رَبُّكَ أَعْبَاهُمْ ۖ إِنَّهُ بِنَايَعْلُونَ خَبِيرٌ ۚ فَاسْتَقِمُّ كَمَا أُمِرْتَ وَ

तुम्हारा रब उस का अमल पूरा भर देगा उसे उन के कामों की खबर है²²⁷ तो काइम रहो²²⁸ जैसा तुम्हें हुक्म है और

مَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۖ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ وَلَا تَرْكَبُوا

जो तुम्हारे साथ रजुअ लाया है²²⁹ और ऐ लोगो सरकशी न करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है और ज़ालिमों की तरफ़

إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَسْكُمُ النَّارُ ۖ وَمَالِكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءٍ

न झुको²³⁰ कि तुम्हें आग छूएगी और **अब्बाह** के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं²³¹

इस ज़ियादती की कोई इन्तिहा नहीं, तो मा'ना येह हुए कि हमेशा रहेंगे, कभी इस से रिहाई न पाएंगे। 217 : इतना और ज़ियादा रहेंगे। इस ज़ियादती की कुछ इन्तिहा नहीं इस से हमेशगी मुराद है चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है : 218 : बेशक येह इस बुत परस्ती पर अज़ाब दिये जाएंगे जैसे कि पहली उम्मतें मुब्तलाए अज़ाब हुई। 219 : और तुम्हें मा'लूम हो चुका कि उन का क्या अन्जाम होगा। 220 : या'नी तौरैत। 221 : बा'जे उस पर ईमान लाए और बा'ज ने कुफ़्र किया। 222 : कि इन के हि़साब में जल्दी न फ़रमाएगा। मख़्लूक के हि़साब व जज़ा का दिन रोज़े क़ियामत है। 223 : और दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अज़ाब किये जाते। 224 : या'नी आप की उम्मत के कुफ़्फ़ार कुरआने करीम की तरफ़ से। 225 : जिस ने उन की अक्लों को हैरान कर दिया है। 226 : तमाम ख़ल्क, तस्दीक करने वाले हों या तकज़ीब करने वाले रोज़े क़ियामत 227 : उस पर कुछ मख़फ़ी नहीं। इस में नेकों और तस्दीक करने वालों के लिये तो बिशारत है कि वोह नेकों की जज़ा पाएंगे और काफ़ि़रों और तकज़ीब करने वालों के लिये वईद है कि वोह अपने अमल की सज़ा में गिरिफ़्तार होंगे। 228 : अपने रब के हुक्म और उस के दीन की दा'वत पर 229 : और उस ने तुम्हारा दीन क़बूल किया है, वोह दीन व ताअत पर काइम रहे। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : सुफ़यान बिन अब्दुल्लाह सक्फ़ी ने रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से अर्ज़ किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी से दरयाफ़्त करने की हाज़त न रहे। फ़रमाया : "أَمْسُتُ بِاللَّهِ" कह और काइम रह। 230 : "किसी की तरफ़ झुकना" उस के साथ मेल महब्वत रखने को कहते हैं, अबुल आलिया ने कहा कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों के आ'माल से राज़ी न हो। सुदी ने कहा : उन के साथ मुदाहनत (बा वुजूदे कुदरत उन के सामने दीन में पिलपिला पन इरज़ियार) न करो। क़तादा ने कहा : मुशिरकीन से न मिलो। मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि खुदा के ना फ़रमानों के साथ या'नी काफ़ि़रों और बे दीनों और गुमराहों के साथ मेलजोल, रस्मो राह, मवद्दत (प्यार) व महब्वत, उन की हां में हां मिलाना, उन की खुशामद में रहना मम्मूअ है। 231 : कि तुम्हें उस के अज़ाब से बचा सके। येह हाल तो उन का है जो ज़ालिमों से रस्मो राह मेल व महब्वत रखें और इसी से उन का हाल क़ियास करना चाहिये जो खुद ज़ालिम हैं।

ثُمَّ لَا تَنْصُرُونَ ﴿۱۳﴾ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُزُقًا مِنَ اللَّيْلِ ۖ إِنَّ

फिर मदद न पाओगे और नमाज़ काइम रखो दिन के दोनों किनारों²³² और कुछ रात के हिस्सों में²³³ बेशक

الْحَسَنَاتِ يُدْهِبِنَ السَّيِّئَاتِ ۖ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلَّذِينَ كَرِهُوا ﴿۱۴﴾ وَأَصْبِرْ فَإِنَّ

नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं²³⁴ यह नसीहत है नसीहत मानने वालों को और सब्र करो कि

اللَّهُ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿۱۵﴾ فَلَوْ لَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ

अल्लाह नेकों का नेग (अज़्र) जाएअ नहीं करता तो क्यूं न हुए तुम में से अगली संगतों (कौमों) में²³⁵ ऐसे जिन में

أُولُو أَبْقِيَةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا

भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते²³⁶ हां उन में थोड़े थे वोही जिन को हम ने नजात

مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبِعْ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿۱۶﴾ وَ

दी²³⁷ और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया²³⁸ और वोह गुनहगार थे और

مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿۱۷﴾ وَلَوْ شَاءَ

तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को बे वजह हलाक कर दे और उन के लोग अच्छे हों और अगर

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ مُخْتَلِفِينَ ۗ إِلَّا مَن

तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता²³⁹ और वोह हमेशा इख़िलाफ़ में रहेंगे²⁴⁰ मगर जिन

رَحِمَ رَبُّكَ ۖ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ ۖ وَتَبَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَا مَلَكٌ جَهَنَّمَ

पर तुम्हारे रब ने रहम किया²⁴¹ और लोग इसी लिये बनाए हैं²⁴² और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा

²³² : दिन के दो किनारों से सुबह व शाम मुराद हैं। ज़वाल से कबल का वक़्त सुबह में और बा'द का शाम में दाखिल है। सुबह की नमाज़ "फ़ज़्र" और शाम की नमाज़ "ज़ोहर व अस्र" हैं। ²³³ : और रात के हिस्सों की नमाज़ें "मगरिब व इशा" हैं। ²³⁴ : नेकियों से मुराद या येही पन्जगाना नमाज़ें हैं जो आयत में ज़िक्र हुई या मुलक ताअतें या "سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ" पढ़ना। मस्अला : आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सगीरा गुनाहों के लिये कफ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ हों या सदका या ज़िक्र व इस्तिफ़ार या और कुछ। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि पांचों नमाज़ें और जुमुआ दूसरे जुमुआ तक और एक रिवायत में है कि रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़ारा हैं उन गुनाहों के लिये जो इन के दरमियान वाकेअ हों जब कि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे। शाने नुज़ूल : एक शख्स ने किसी औरत को देखा और उस से कोई ख़फ़ीफ़ सी हरकत बे हिजाबी की सरज़द हुई इस पर वोह नादिम हुवा और रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपना हाल अर्ज़ किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। उस शख्स ने अर्ज़ किया कि सगीरा गुनाहों के लिये नेकियों का कफ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिये है? फ़रमाया : नहीं, सब के लिये। ²³⁵ : या'नी पहली उम्मतों में जो हलाक की गई। ²³⁶ : मा'ना येह हैं कि उन उम्मतों में ऐसे अहले ख़ैर नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मन्अ करते, इसी लिये हम ने उन्हें हलाक कर दिया। ²³⁷ : वोह अम्बिया पर ईमान लाए, उन के अहक़ाम पर फ़रमां बरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे। ²³⁸ : और तनअउम व तलज़ुज़ (ऐश व लज़्ज़ात) और ख़्वाहिशात व शहवात के आदी हो गए और कुफ़्र व मआसी में डूबे रहे। ²³⁹ : तो सब एक दीन पर होते ²⁴⁰ : कोई किसी दीन पर कोई किसी पर ²⁴¹ : वोह दीने हक़ पर मुत्तफ़िक़ रहेंगे और इस में इख़िलाफ़

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾ وَكَلَّا نَقْصُ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ

जिन्होंने और आदमियों को मिला कर²⁴³ और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की खबरें सुनाते हैं

مَا نَشِئْتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى

जिस से तुम्हारा दिल ठहराए²⁴⁴ और इस सूत्र में तुम्हारे पास हक़ आया²⁴⁵ और मुसलमानों को

لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَا كَانْتُمْ إِذَا

पन्दो नसीहत²⁴⁶ और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ²⁴⁷ हम अपना

عَمِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَأَنْتَظِرُونَ ۗ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ وَ لِلَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَ

काम करते हैं²⁴⁸ और राह देखो हम भी राह देखते हैं²⁴⁹ और **اللَّهُ** ही के लिये हैं आस्मानों और

الْأَرْضِ وَالْيَوْمِئِزَّةِ إِلَّا مَرَكَلَةٌ فَأَعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۗ وَمَا رَبُّكَ

ज़मीन के ग़ैब²⁵⁰ और उसी की तरफ़ सब कामों की रज़ूअ है तो उस की बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾

तुम्हारे कामों से गा़फ़िल नहीं

﴿ ١٢٣ ﴾ ﴿ ١٢٢ ﴾ ﴿ ١٢١ ﴾ ﴿ ١٢٠ ﴾ ﴿ ١١٩ ﴾ ﴿ ١١٨ ﴾ ﴿ ١١٧ ﴾ ﴿ ١١٦ ﴾ ﴿ ١١٥ ﴾ ﴿ ١١٤ ﴾ ﴿ ١١٣ ﴾ ﴿ ١١٢ ﴾ ﴿ ١١١ ﴾ ﴿ ١١٠ ﴾ ﴿ ١٠٩ ﴾ ﴿ ١٠٨ ﴾ ﴿ ١٠٧ ﴾ ﴿ ١٠٦ ﴾ ﴿ ١٠٥ ﴾ ﴿ ١٠٤ ﴾ ﴿ ١٠٣ ﴾ ﴿ ١٠٢ ﴾ ﴿ ١٠١ ﴾ ﴿ ١٠٠ ﴾ ﴿ ٩٩ ﴾ ﴿ ٩٨ ﴾ ﴿ ٩٧ ﴾ ﴿ ٩٦ ﴾ ﴿ ٩٥ ﴾ ﴿ ٩٤ ﴾ ﴿ ٩٣ ﴾ ﴿ ٩٢ ﴾ ﴿ ٩١ ﴾ ﴿ ٩٠ ﴾ ﴿ ٨٩ ﴾ ﴿ ٨٨ ﴾ ﴿ ٨٧ ﴾ ﴿ ٨٦ ﴾ ﴿ ٨٥ ﴾ ﴿ ٨٤ ﴾ ﴿ ٨٣ ﴾ ﴿ ٨٢ ﴾ ﴿ ٨١ ﴾ ﴿ ٨٠ ﴾ ﴿ ٧٩ ﴾ ﴿ ٧٨ ﴾ ﴿ ٧٧ ﴾ ﴿ ٧٦ ﴾ ﴿ ٧٥ ﴾ ﴿ ٧٤ ﴾ ﴿ ٧٣ ﴾ ﴿ ٧٢ ﴾ ﴿ ٧١ ﴾ ﴿ ٧٠ ﴾ ﴿ ٦٩ ﴾ ﴿ ٦٨ ﴾ ﴿ ٦٧ ﴾ ﴿ ٦٦ ﴾ ﴿ ٦٥ ﴾ ﴿ ٦٤ ﴾ ﴿ ٦٣ ﴾ ﴿ ٦٢ ﴾ ﴿ ٦١ ﴾ ﴿ ٦٠ ﴾ ﴿ ٥٩ ﴾ ﴿ ٥٨ ﴾ ﴿ ٥٧ ﴾ ﴿ ٥٦ ﴾ ﴿ ٥٥ ﴾ ﴿ ٥٤ ﴾ ﴿ ٥٣ ﴾ ﴿ ٥٢ ﴾ ﴿ ٥١ ﴾ ﴿ ٥٠ ﴾ ﴿ ٤٩ ﴾ ﴿ ٤٨ ﴾ ﴿ ٤٧ ﴾ ﴿ ٤٦ ﴾ ﴿ ٤٥ ﴾ ﴿ ٤٤ ﴾ ﴿ ٤٣ ﴾ ﴿ ٤٢ ﴾ ﴿ ٤١ ﴾ ﴿ ٤٠ ﴾ ﴿ ٣٩ ﴾ ﴿ ٣٨ ﴾ ﴿ ٣٧ ﴾ ﴿ ٣٦ ﴾ ﴿ ٣٥ ﴾ ﴿ ٣٤ ﴾ ﴿ ٣٣ ﴾ ﴿ ٣٢ ﴾ ﴿ ٣١ ﴾ ﴿ ٣٠ ﴾ ﴿ ٢٩ ﴾ ﴿ ٢٨ ﴾ ﴿ ٢٧ ﴾ ﴿ ٢٦ ﴾ ﴿ ٢٥ ﴾ ﴿ ٢٤ ﴾ ﴿ ٢٣ ﴾ ﴿ ٢٢ ﴾ ﴿ ٢١ ﴾ ﴿ ٢٠ ﴾ ﴿ ١٩ ﴾ ﴿ ١٨ ﴾ ﴿ ١٧ ﴾ ﴿ ١٦ ﴾ ﴿ ١٥ ﴾ ﴿ ١٤ ﴾ ﴿ ١٣ ﴾ ﴿ ١٢ ﴾ ﴿ ١١ ﴾ ﴿ ١٠ ﴾ ﴿ ٩ ﴾ ﴿ ٨ ﴾ ﴿ ٧ ﴾ ﴿ ٦ ﴾ ﴿ ٥ ﴾ ﴿ ٤ ﴾ ﴿ ٣ ﴾ ﴿ ٢ ﴾ ﴿ ١ ﴾ ﴿ ٠ ﴾

सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है, इस में एक सो ग्यारह आयतें और बारह रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला¹

الرَّحْمَنُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۚ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ

येह रोशन किताब की आयतें हैं² बेशक हम ने इसे अरबी कुरआन उतारा

न करेंगे । 242 : या'नी इख़िलाफ़ वाले इख़िलाफ़ के लिये और रहमत वाले इत्तिफ़ाक़ के लिये । 243 : क्यूं कि उस को इल्म है कि बातिल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे । 244 : और अम्बिया के हाल और उन की उम्मतों के सुलूक देख कर आप को अपनी क़ौम की ईजा का बरदाश्त करना और उस पर सब फ़रमाना आसान हो । 245 : और अम्बिया और उन की उम्मतों के तज़्किरे वाक़ेअ के मुताबिक़ बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को हासिल नहीं या'नी जो वाकिआत बयान फ़रमाए गए वोह हक़ भी हैं । 246 : भी, कि गुज़री हुई उम्मतों के हालात और उन के अन्जाम से इब्रत हासिल करें । 247 : अन्क़रीब इस का नतीजा पा लगे । 248 : जिस का हमें हमारे रब ने हुक्म दिया । 249 : तुम्हारे अन्जामे कार की । 250 : उस से कुछ छुप नहीं सकता । 1 : सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है इस में बारह रकूअ और एक सो ग्यारह आयतें और एक हज़ार छ⁶ सो कलिमे और सात हज़ार एक सो छियासठ हर्फ़ हैं । शाने नुजूल : उलमाए यहूद ने अशराफ़े अरब से कहा था कि सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से दरयाफ़्त करो कि औलादे हज़रते या'क़ूब मुल्के शाम से मिस्र में किस तरह पहुंची और उन के वहां जा कर आबाद होने का क्या सबब हुआ और हज़रते यूसुफ़ **عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالسَّلَامَاتُ** का वाकिआ